शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

राष्ट्रीय एकता एवं धर्मनिरपेक्षता में संगीत की भूमिका

प्राप्तिः 12.11.2021
स्वीकृतः 27.12.2021

डॉ० अनिता रानी
एसोसिऐट प्रोफेसर, संगीत विभाग
श्रीमती बी०डी० जैन गर्ल्स (पी०जी०) कॉलेज
आगरा
ईमेलः *dr.anita80@gmail.com*

सारांश

धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीयता, आज के परिपेक्ष्य में ये दोनों शब्द एक समान दिखाई देते हैं। किन्तु वास्तव में दोनों शब्दों के अर्थ अत्यंत ही भिन्न हैं। वैसे तो धर्मनिरपेक्षता के ही अर्थ को लेकर समाज में अत्यंत भ्रम की स्थिति है। धर्मनिरपेक्षता का मतलब क्या होना चाहिए। सभी धमों का आदर करना या किसी भी धर्म को नहीं मानना? सबके अपन–अपने मत हो सकते हैं। जहॉ तक मुझे लगता हैं, अपने धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास तथा दूसरे धर्मों का आदर ही सही मायने में धर्मनिरपेक्षता है।

भारत एक ऐसा देश है जहॉ विभिन्न धर्म, क्षेत्र, संस्कृति, परम्परा, जाति, रंग और पंथ के लोग एक साथ रहते है। राष्ट्रीय एकीकरण के लिए आवश्यक है कि अलग–अलग संस्कृति और धर्म के लोगों को एक साथ जोड़ा जाये, और भारत में इसे ही विविधता में एकता के रूप में जाना जाता है।

हमारे देश में सभी धर्मों के लोग जानते हैं कि उनकी संस्कृति एक है। बौद्ध हो या जैन हो या वैष्णव हो या सिक्ख या फिर ब्रह्मसमाजी सभी मानते हैं कि उनके पूर्वज एक थे। भले ही बाद में उनके पूर्वजों के जीवनकथा को अलग–2 मजहब का रंग दे दिया गया। सबको जोड़ने के लिए ही तीन रंगों के कपड़े जोड़कर तिरंगा बनाया गया है। यह कोई साधारण कपड़ा नहीं है बल्कि उसे हमने राष्ट्रीय एकता का प्रतीक माना हैं। हमें अपने देश की एकता और अखण्ड़ता पर गर्व है।

संगीत की भाषा सार्वभौमिक भाषा है। कहा भी गया है। "Music is a Universal Language." संगीत में सात स्वर होते हैं, सात दिन, सात रंग। सभी देशों में यही है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिससे कोई अछूता नहीं रह सकता चाहे वह किसी भी धर्म एवं जाति से सम्बन्ध रखता हो। संगीत एक ऐसी कला हैं जो प्रत्येक व्यक्ति को मंत्र मुग्ध कर देती है। और उसमें उत्तम विचारों को उत्नन्न कर उसे भ्रमित होने से रोकती है। अतः निष्कर्श रूप में हम कह सकते है कि राष्ट्रीय एकता एवं धर्मनिरपेक्षता को मजबूत करने में संगीत महत्ती भूमिका निभाता है।

मुख्य शब्द

राष्ट्रीय एकता, संगीत, धर्मनिरपेक्षता, संस्कृति।

धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीयता, आज के परिपेक्ष्य में ये दोनों शब्द एक समान दिखाई देते हैं। किन्तु वास्तव में दोनों शब्दों के अर्थ अत्यंत ही भिन्न हैं। वैसे तो धर्मनिरपेक्षता के ही अर्थ को लेकर समाज में अत्यंत भ्रम की स्थिति है। धर्मनिरपेक्षता का मतलब क्या होना चाहिए। सभी धर्मो का आदर करना या किसी भी धर्म को नहीं मानना? सबके अपन–अपने मत हो सकते हैं। जहॉ तक मुझे लगता हैं, अपने धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास तथा दूसरे धर्मों का आदर ही सही मायने में धर्मनिरपेक्षता है।

भारत एक ऐसा देश है जहॉ विभिन्न धर्म, क्षेत्र, संस्कृति, परम्परा, जाति, रंग और पंथ के लोग एक साथ रहते है। राष्ट्रीय एकीकरण के लिए आवश्यक है कि अलग–अलग संस्कृति और धर्म के लोगों को एक साथ जोड़ा जाये, और भारत में इसे ही विविधता में एकता के रूप में जाना जाता है। लेकिन हम इस बात को भी अनदेखा नहीं कर सकते हैं कि यहॉ निवास कर रहे लोगों की सोच में विविधता केकारण ही ये अभी भी विकासशील देशों में आता है।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। विश्व स्तर पर जहॉ हर एक देश अपने धर्म अथवा राष्ट्रीय धर्म पर चलते हैं, वहीं भारत अपनी धर्मनिरपेक्ष नीति पर चलता है, यहॉ अनेक धर्मों–जातियों के लोग रहते हैं। फिर भी भारतीय नागरिक एकता और अखण्ड़ भारत के प्रतीक हैं। भारतीय नागरिकों को समाजवादी रूप में समान रूप से शासन द्वारा आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक सहयोग प्रदान किया जाता है। जिससे प्रत्येक राज्य एवं प्रत्येक क्षेत्रमें रहने वाला भारतीय नागरिक सुखपूर्वक अपनी रूचि एवं स्वतंत्रता से सुखद जीवन यापन करता हैं। भारत के प्रत्येक नागरिक को जिसकी आयु 18 वर्ष है, को अपना मत देने का अधिकार है। भारतीय नागरिक स्वेच्छा से निर्वाचन के समय बिना किसी धर्म के दबाव में अपने वोट का प्रयोग कर सकता है। भारत एक ऐसा देश है जो अपने आप में संप्रभुत्व संम्पन्न है। किसी भी देश के लिए संप्रभुत्व संम्पन्न होना स्वयं में श्रेष्ठता है।

ईश्वर की आराधना को धर्म माना जाता है जोकि अत्यंत वैयक्तिक विषय है। कोई व्यक्ति किस तरह की मान्यता ओं में विश्वास रखना चाहता है और कौन सी पूजा आराधना पद्धति का अनुकरण करना चाहता है यह पूरी तरह से उसकी इच्छा पर निर्भर करता है। आधुनिक भारत एक धर्मनिर्पेक्ष राज्य है जिसमें देश के सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता मौलिक अधिकारों के रूप में प्राप्त है। भारतीय नागरिक अपने गणतंत्र भारत देश में रहते हुए जो स्वतंत्रता एवं सुखानुभूति प्राप्त करते हैं। वह संसार के किसी भी देश में पाया जाना दुर्लभ है। उदाहरण के लिए भारत के प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार प्राप्त है। अधिकार सामाजिक जीवन की वे परिस्थतियां हैं, जो मानव जीवन के विकास के लिए स्वतंत्रता और सुविधाओं के आयाम बनते हैं। इनके बिना मानव आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति नहीं कर सकता है। भारतीय संविधान निर्माताओं ने भारतीय नागरिकों को न केवल मूल अधिकार प्रदान किए बल्कि उनके संरक्षण की भी पूरी व्यवस्था की। जिसके अर्न्तगत कोई भी व्यक्ति अपने धर्म का प्रचार स्वतंत्रतापूर्वक कर सकता है। किन्तु राज्य किसी भी धर्म विशेष का समर्थन नहीं करता है।

धर्मनिपेक्षता (सेंक्यूलरिज्म) शब्द का पहले पहल प्रयोग बर्मिघम के जार्ज जेकब हॉलीमाक ने सन् 1864 के दौरान अनुभवों द्वारा मनुष्य जीवन को बेहतर बनाने के तौर तरीकों को दर्शाने के लिए किया था। उनके अनुसार, ''आस्तिकता –नास्तिकता और धर्म ग्रंथों में उलझे बगैर मनुष्य मात्र के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, बौद्धिक स्वभाव को उच्चतम संभावित बिंदु तक विकसित करने के

लिए प्रतिपादित ज्ञान सेवा ही धर्मनिरपेक्षता है।'' किंतु एतिहासिक रूप से भारत में 'सर्वधर्म समन्वय' और वैचारिक एवं दार्शनिक स्वतंत्रता अनादिकाल से चली आ रही है।

हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों का देश है जो समूचे विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखता है। अलग–2 संस्कृति और भाषाएं होते हुए भी हम सभी एक सूत्र में बंधे हुए हैं। संगठन ही सभी शक्तियों की जड़ है, एकता के बल पर ही अनेक राष्ट्रों का निर्माण हुआ है, प्रत्येक वर्ग में एकता के बिना देश कदापि उन्नति नहीं कर सकता। एकता में महान शक्ति है। एकता के बल पर हम बड़ी से बड़ी जीत हासिल कर सकते हैं राष्ट्रीय एकता का मतलब ही है राष्ट्र के सब घटकों में भिन्न–2 विचारों और विभिन्न आस्थाओ के होते हुए भी आपसी प्रेम एकता एवं भाईचारे का बना रहना, राष्ट्रीय एकता में केवल शारीरिक समीपता ही महत्वपूर्ण नही होती बल्कि उनमें मानसिक बौद्धिक वैचारिक और भावात्मक निकटता की समानता आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय है सभी नागरिक राष्ट्र प्रेम से ओत प्रोत हों, सभी नागरिक पहले भारतीय हों, फिर हिन्दु, मुस्लमान, सिख, ईसाई व अन्य हैं।

हमारे मूल्य गहराई से अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं जिन पर हमारे ऋषि मुनियों और विद्वानों ने बल दिया है। हमारे मूल्यों को सभी धर्मग्रंथ में स्थान मिला है चाहे कोई भी धर्म हों। मानव मात्र की एकता सार्वभौमिकता और शांति की महायात्रा पर जोर दिया है। भारत के लोग चाहे किसी भी धर्म के हों सभी धर्मों का आदर करना जानते हैं। जैसे कि हमारी संस्कृति में भी माना गया है। इसलिए हमारा राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष है।

किसी भी सभ्य और लोकतांत्रिक राष्ट्र समाज की आधारशिला यह है कि वह अपने नागरिकों को लिंग, धर्म, जाति, आर्थिक स्थिति आदि के आधार पर बिना किसी भेदभाव के सबके साथ समान व्यवहार करे। वास्तव में–राज्य द्वारा नागरिकों से समान व्यवहार की यह प्रक्रिया समाज में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उन तार्किक सामाजिक मूल्यों की स्थापना करती है और किसी भी राष्ट्र के जीवन और विकास की आधारभूत आवश्यकता होती है।

हमारे देश में सभी धर्मों के लोग जानते हैं कि उनकी संस्कृति एक है। बौद्ध हो या जैन हो या वैष्णव हो या सिक्ख या फिर ब्रह्मसमाजी सभी मानते हैं कि उनके पूर्वज एक थे। भले ही बाद में उनके पूर्वजों के जीवनकथा को अलग–2 मजहब का रंग दे दिया गया। सबको जोड़ने के लिए ही तीन रंगों के कपड़े जोड़कर तिरंगा बनाया गया है। यह कोई साधारण कपड़ा नहीं है बल्कि उसे हमने राष्ट्रीय एकता का प्रतीक माना हैं। इसकी प्रतिष्ठा राष्ट्र की प्रतिष्ठा और इसका अपमान राष्ट्र का अपमान है। इसलिए इस तिरंगे की शान के लिए अब तक करोड़ों भारतीय अपने प्राणों की आहूति दे चुके हैं। इसी बलिदान का परिणाम है कि आज हमारी राष्ट्रीय एकता के प्रतीक तिरंगा झण्ड़ा अपने सर्वोच्च स्थान पर गर्व के साथ लहरा रहा है। हमें अपने देश की एकता और अखण्ड़ता पर गर्व है।

भारत एक बहुजातिय, बहुवर्गीय और बहुसाम्प्रदायिक देश है। यहॉ विभिन्न धर्म संस्कृतियॉ और भाषाएं जन्म लेकर पल्लिवत हुई।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत के संविधान निर्माताओं ने देश के इसी विविध रूप समाज को देखकर धर्मनिरपेक्षता को राज्य व्यवस्था का एक प्रमुख उद्देश्य और भारत को धर्म निरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया।

भारतीय संविधान के अनुसार धर्म प्रधान देश भारत में धर्मनिरपेक्षता का तात्पर्य धर्म को अस्वीकार करना नहीं है, बल्कि समस्त धर्मों का सम्मान कर उनके धार्मिक मतों एवं विश्वासों का

प्रचार एवं व्याख्या करने की स्वतंत्रता प्रदान करना है। धर्मनिरपेक्षता का यह सिद्धान्त विभिन्न धर्मों के बीच रहकर सौहार्द एवं भाईचारे की भावना विकसित करने में सफल रहा है।

भारत की एकता, अखण्ड़ता तथा धर्मनिरपेक्षता को बनाये रखने के लिए संगीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसा कि सभी जानते हैं संगीत जड़ एवं चेतन सभी पर अपना प्रभाव डालता है। संगीत की भाषा सार्वभौमिक भाषा है। कहा भी गया है। "Music is a Universal Language." संगीत में सात स्वर होते हैं, सात दिन, सात रंग। सभी देशों में यही है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिससे कोई अछूता नहीं रह सकता चाहे वह किसी भी धर्म एवं जाति से सम्बन्ध रखता हो। संगीत एक ऐसी कला हैं जो प्रत्येक व्यक्ति को मंत्र मुग्ध कर देती है। और उसमें उत्तम विचारों को उत्नन्न कर उसे भ्रमित होने से रोकती है। ललित कलाएँ पॉच है सभी में संगीत उत्कृष्ट कला है। और अपना प्रभाव सभी पर आसानी से छोड़ देती है। हमें संगीत से प्रेम है पर इसके आदर्श को हम भूल जाते हैं जो प्राचीन भारत में विद्यमान था। हम संगीत के सिद्धान्त में मग्न हो जाते हैं। जिसका अर्थ साधारणतया संगीत का व्याकरण है। किन्तु वास्तव में संगीत के सिद्धान्त में गायन तथा वादन के साथ–2 व्यवहारिक संगीत के अतिरिक्त जितने पहलु हैं, वे भी आ जाते हैं जैसे कि साधना आदि। उपनिषदों तथा अन्य प्राचीन संस्कृत–ग्रन्थों में हमें शास्त्र एवं साधना जैसे शब्द मिलते हैं। शास्त्रों का तात्पर्य वेद, उपनिषद तथा वेदांग जैसे कि षट्–दर्शन तथा विज्ञान एवं कला पर लिखी अन्य धार्मिक सामग्री से ही है और साधना का अर्थ आध्यात्मिक अभ्यास से है। जो मनुष्य को चिरप्रकाशमान् शाश्वत सत्य की एक झलक प्राप्त करने के योग्य बनाती है। शास्त्र हमारे पथ–प्रदर्शक का कार्य करते हैं तथा परम सत्य की प्राप्ति के मार्ग एवं साधन निश्चित करते हुए साधक के अभ्यास में सहायता देते हैं। शास्त्र, संगीत का केवल सैद्धाान्तिक पक्ष है। जिसमें विधि, नियम या अधिनियम हैं। जो मुख्यता मानव के द्वारा संगीत की साधना को सरल बनाने का कार्य करते हुए अन्त में सर्वोच्च आदर्श की ओर ले जाते हैं। इस अर्थ में संगीत दर्शन जो संगीत की साधना पर अनेक रूपों में प्रभाव डालते एवं रंजित करते हैं। भारतीय संगीत केवल लिपि संकेतों का ढॉचा तथा उनका क्रम संचय एवं मेल मात्र ही नहीं है। अपितु उससे भी कुछ अधिक है। यह दृष्टिकोण का विस्तृत स्वरूप व प्रकृति की आत्मा है। और यद्वपि इसको भौतिक ध्वनियों तथा धुनों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। फिर भी यह कल्पनातित लोक की वस्तु है और अपने प्रभाव में आकर साधारण प्राणी को भी विविष्ठ के स्तर तक पहुॅचा देता है। और भारतीय संगीत के रागों को जीवित तथा शक्तिमान समझना चाहिए। उनकी कल्पना मिथ्या अथवा व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित नहीं है। ईसा की 15वीं तथा 16वीं शदी में अनेक अन्तर्जगत् में विचरण करने वाले कवियों ने ध्यान की अवस्था में रागों का साक्षात्कार किया था और ध्यान मंत्रों की रचना भी की थी, जिसमें रंग एवं रेखा में उन्हें रूप देने हेतु प्रतिभाशाली कलाकारों को प्रेरित किया। वास्तव में आन्तरिक महत्व की वस्तुएँ और मानव रागों की पवित्रता एवं वास्तविक अर्थ के समझाने में सहायता देने की योग्यता रखती है। इसके साथ रागों का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से होना चाहिए। इतिहास अतीत की घटनाओं का अकृतिम लेखा–जोखा है। यदि हम भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों पर ऐतिहासिक खोज का प्रकाश डालें तो ज्ञात होगा कि उनमें अनेक भारत के आर्य तथा अनार्यों की जातिय एंव क्षेत्रीय धुनों का समागम है। कुछ का विकास विदेशी राष्ट्रों के सम्पर्क के कारण हुआ तथा कुछ की रचना भारतीय एवं फारसी तत्वों की सहउन्मन से उत्पन्न

सामग्री के आधार पर हुई जोकि प्राकृतिक भी है। भारत ने सदैव उदार एवं मानक दृष्टिकोण अपनाया है।

श्रीराम एक राष्ट्र पुरुष है और प्रत्येक जाति एवं मजहब के लिए एक सशक्त एकता सूत्र है, श्रीराम समाज के समस्त वर्गों को जोड़ने वाले प्रतिक स्वरुप राष्ट्रीय महापुरुष है। श्रीराम मर्यादाएं स्थापित की उन्ही के कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए और यही पुरुषोत्तम राम जन–जन की आत्मा में उतर आये है। उनके ये आदर्श व्यक्तिगत वस्तु बनकर रहे, उन्होंने भारतीय संस्कृति के ऊचे सिद्धांतो को अपने जीवन में उतर कर यह सिद्ध किया कि यह सब आचरण साधारण मनुष्य जीवन में उतार सकता है। यह किसी मानव के पहुंच के बाहर नहीं है, इसलिए इसका जीवन इस देश की भावना से जुड़ा हुआ है। उनका आदर्श पूरे भारत को एकता में जोड़ता है ,वही आदर्श कवियों ने अपनी कलम में उतार दिया तथा गायकों ने स्वरों में ढालकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में उनके आदर्शो लो फैलाया। इस प्रकार श्रीराम पूरे भारत को एक सूत्र में बांधने में सफल हुए। इन्हीं सब बातों से प्रतीत होता है कि संगीत एकता का बहुत बड़ा माध्यम है।

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि राष्ट्रीय एकता एवं धर्मनिरपेक्षता को मजबूत करने में संगीत महत्ती भूमिका निभाता है।

सन्दर्भ

1. बृहद हिंदी कोश
2. पृथ्वी पुत्र राष्ट्र का स्वरुप, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल
3. राष्ट्रीय एकता में संगीत, डॉ० सत्या भार्गव
4. संगीत द्वारा भावात्मक एकता, डॉ० भा० वा० आव्वले
5. विश्व की प्रभावषाली भाषा संगीत, श्रीमती कृष्णा माहेश्वरी
6. संगीत कला विहार
7. संगीत मासिक पत्रिका
8. भैरवी संगीत शोध पत्रिका